Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 10, Issue-II, August 2025

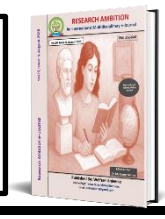

चंद्रकांत देवताले के काव्य का भाषा–विन्यास
(The Language Structure of Chandrakant Devtale's Poetry)

Dr. Banwari Lal[a*]

[a]*Associate Professor (VSY), Modison Rajkiya Mahavidyalaya Fatehpur Sikar, Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University, Sikar, Rajasthan (India).*

KEYWORDS

मानक भाषा हिंदी, आंचलिक एवं देशज भाषा, आंग्ल, उर्दू, अरबी एवं फारसी इत्यादि भाषाओं का बेजोड़ एवं अनूठा प्रयोग।

ABSTRACT

व्यक्ति के विचार भाषा के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाएं जाते हैं, इसके लिए कवि या लेखक अपने काव्य में उन शब्दों को बहुतायत से प्रयुक्त करता है, जो जन सामान्य की भाषा में समाहित होते हैं। कवि चंद्रकांत देवताले जी ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति में आंचलिक, ग्रामीण या देशज शब्दों का प्रयोग करते हुए पाठकों तक अपने विचार पहुंचाने में सक्षम रहे हैं। पाठक उनकी धारा–प्रवाह शैली से प्रभावित होते रहते हैं। देवताले जी के हृदय के विचारों को पाठक तक पहुंचाने के लिए मानो भाषा उन्हें सहज स्वीकृति प्रदान कर देती है। कवि की विशिष्ट कला बिम्ब–शैली मानो उन्हें सहज प्रेरित कर विचार प्रवाह की साक्षी बन जाती है। आपकी काव्य–शैली में बिम्ब सहज में प्रयुक्त होकर एक कौतूहल भी व्याप्त कर देती है। आपने कहीं आवाजों के दरख़्त खड़े कर दिए हैं, तो कहीं बावड़ी को अंधा बताकर मानवीकरण कर साक्षात् रूप प्रस्तुत किया है। इस प्रकार आप भाषा के शिल्पकार और सौंदर्यीकरण में सिद्ध हस्त हैं। कवि का काव्य– कौशल बिंब रूप में यादों के फ़व्वारे लेकर भावुक होने का एक जीवंत प्रमाण प्रस्तुत किया है। वाक् पटु, स्पष्ट वक्ता और बुलंद आवाज में निष्पक्ष विचारों को प्रस्तुत करना संघर्ष का प्रतिमान होगा। सहज स्नेह और श्रृंगार भावों से पूरित कविता की अपेक्षा चेतना और संघर्ष के साथ चुनौतीपूर्ण शब्दों का अपनी रचनाओं में बेबाक प्रयोग किया है। कवि हृदय के भावों को मापने का कोई पैरामीटर नहीं होता, फिर भी पाठक विचारों और शब्दों से भावनाओं की गहराई और विचारों की उन्नतश्रृंग का आभासी प्रतिबिंब सहज ही स्वीकार कर लेता है, ऐसे ही उदात्त विचारों से ओत–प्रोत शैली और भाव कवि चंद्रकांत देवताले की रचनाओं में परिलक्षित होता है। सारांश रूप में समकालीन और नई कविता के प्रतिमानों को यथातर्क और प्रमाण के साथ अपनी लगभग चार दशक की काव्य– यात्रा में समाज, राजनीति, राष्ट्र, जन चेतना, युवा–बोध, युग–बोध, नई चेतना, दलित–विमर्श, प्रकृति चित्रण और प्रेरणा पुंज से प्रकाशित काव्य पाठकों को बहुत कुछ सारांश सीमा का अनंत अवबोध करा जाता है।

प्रस्तावना

भाषा एक ऐसा माध्यम है, जिससे मनुष्य अपने मन में उत्पन्न होने वाले विचार एवं भावों को बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुंचाते हैं। देवताले जी में यह कला परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप धारण कर समाहित हुई है। वे जिस दृश्य को देखते थे, उसे बिम्ब रूप के ढांचे में

Corresponding author
****E-mail:** banwarilal65830@gmail.com (Dr. Banwari Lal). https://orcid.org/0009-0003-0779-2127
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v10n2.04
Received 8th June 2025; Accepted 10th July 2025
Available online 30th August 2025
2456-0146 /© 2025 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

तरासकर पाठक तक पहुंचाने में सफल रहे हैं, जिनको विभिन्न भाषा शब्दों के माध्यम से संप्रेषित करने में सक्षम रहे हैं। उनके कहने की कला में विभिन्न भाषाओं के कठिन से कठिन शब्दों को भी सहज रूप में तरासकर पाठक या श्रोता तक पहुंचाने का सजग प्रयास किया है, जैसे मानक हिंदी भाषा के शब्दों को आत्मसात् करके मुहावरा रूप में प्रकट करने में सक्षम रहे हैं। यथाः– ''आकाश की आंख में आंखें डाल, अपनी अंगुलियों को फंसा–उलझा घास की जड़ों में, मैं दिन और रात के परे उस फासले पर सांस लेना चाहता हूँ।''[1]

ऐसे ही मन में उत्पन्न होने वाले भाव जिनको साधारण व्यक्ति सहज वार्ता के दौरान प्रस्तुत नहीं कर सकता, वे भाव कवि काव्यांग के ढांचे में उतारकर पाठकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं, जिसका जीवंत उदाहरण कवि की रचनाओं में सहज रूप से प्रस्तुत हो जाते हैं। यथा–''एक पत्थर का हाथी मेरे आगे, एक पत्थर का शेर मेरे पीछे, मैं मांस का धड़कता हुआ एक छोटा–सा फूल इस तपती हुई रेत पर।''[2]

उक्त विचारों को प्रस्तुत करने के लिए भाषा स्वयं कवि की कलम पर सवार होकर के पाठकों तक पहुंची है, जबकि हर भाव भाषा रूप में प्रस्तुत होने के लिए सहज स्वीकृति प्रदान नहीं करते, लेकिन देवताले जी को मानो यह कला वरदान स्वरूप प्राप्त हुई है। हर कवि की भाषा में घासलेट गिड़गड़ाहट फदफदाता, गुच्छा, फुसफुसाहटों, फड़फड़ाता, धुनकता, टोहती, तुलवाते, घसीटीय आदि शब्द भाषा धारा प्रवाह में सहज प्रयुक्त नहीं हो सकते, परन्तु देवताले जी का लहजा और प्रस्तुति का अंकन करने के लिए कलम उठाती है, तो ऐसे कई जटिल और रूढ़ी शब्द रेल बन जाते हैं और पाठकों के लिए सहज और सुगम होते प्रतीत होते हैं।

आंचलिक भाषा एवं देशजभाषा

कवि ने अपने विचार पाठकों तक पहुंचाने के लिए आंचलिक एवं देशज भाषा का प्रयोग कर तत्कालीन परिस्थितियों को बिम्ब रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं, इन शब्दों का प्रयोग आपकी रचना में बहुतायत से प्राप्त है। यथा– ''रामधन तुम जाओ कीचड़ में, तुम्हारे लड़के का मुंडन किया जा चुका है, तुम साइकिल चुराकर गुनगुना रहे हो जेल में, तुम्हारे नाबालिंग लौंडों ने चुराए थे जूते।''[3]

भारत के मध्य भाग का जो भौगोलिक क्षेत्र है, वह मध्य प्रदेश के नाम से जाना जाता है और भारतीय समाज और संस्कृति का अध्ययन करने पर पाया जाता है कि यह क्षेत्र पहाड़ी, समतल, पठारी भाग होने के कारण यहां विभिन्न प्रकार की जनजातियां, कबीले, संभ्रांत वर्ग के लोग अपनी–अपनी संस्कृति, सभ्यता और भाषा के अनुसार अपना जीवन यापन करते हैं। सहृदय कवि देवताले जी अध्यायन कार्य से जुड़े होने के कारण जिनके और महाविद्यालयी जीवन में विभिन्न क्षेत्र, जाति और संप्रदाय के लोगों से मिलना–जुलना रहा है और उसी का परिणाम है कि उनकी भाषा में आंचलिकता और देशज शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है। यहां तक कि वे अपनी काव्य–कला के माध्यम से पत्थरों में भी रोशनी व्याप्त करी है, तो कहीं पर पानी के घोड़े बनाकर उन पर सवार होने का साहस दिखाया है और अंधेरे की जड़े शायद आपने ही देखी है, इसी के साथ अंधेरे का भी आपने समयांकन करने में सफल रहे हैं और अंधेरे को पुराने अंधेरे की संज्ञा देकर अपनी काव्य–कला का प्रदर्शन किया है। उक्त कथनानुसार आप जिस भू–भाग से जुड़े हैं, जिस जन–भाषा से रूबरू हुए हैं, जिन सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में शामिल हुए हैं, उनकी भाषा और भाव सहज ही आपके हृदय में उतरकर आपकी भाषा और भावों का अंग बने हैं। गांवों के शब्द–विन्यास का कवि ने बहुतायत रूप में प्रयोग किये हैं। यथा–उजास, पेट, चीथता, टेंटुआ, पसर, बचाखुचा, थपथपाहट, खदबदाती, कौड़ियां, पगडंडियां, मटमैला, ऊबड़–खाबड़, टटोलना, भिनभिनाना, चिंघाड़ना आदि।

अतः हम कह सकते हैं कि कवि की भाषा में उक्त आंचलिक और देशज शब्द सहज सम्मान के साथ प्रयुक्त हुए हैं।

आंग्ल भाषा

कवि हृदय का उद्देश्य अपने विचारों को भाषिक–रूप में प्रस्तुत करना ही होता है, जिसके लिए तत्कालीन समय में प्रचलित भाषाओं का प्रयोग कर पाठकों तक पहुंचाने में सफल रहता है। देवताले जी ने भी अपने काव्य में यदा–कदा आंग्ल शब्दों का प्रयोग भी किया है यथा– ''आज अर्जेंट मिटिंग या झुका हो सृजनरत मेज़ पर, दो–तीन तो ऐसे जिनका दिन सोलह घंटे का, फिर भी उनके पास कभी फ़ुरसत नहीं होती, भाग्यशाली बेहद, बिन बात डिस्टर्ब करने से, रोक लेते तुम अपने को, खुद की ख़ामोख़याली के ट्राफिक जाम में फंसे, सोचते पता नहीं पुराने दिनों में, कैसे क्या होता होगा।''[4]

उर्दू भाषाः– कवि ने अपनी काव्य शैली में उर्दू भाषा के शब्द–विन्यास का भी सहज और सरल रूप में प्रयोग किया है। यथाः– ''अभयारण में आजाद बेखौफ– बेखबर घूम रहे थे, और तुम पिंजरे में से देख रहे थे वहां, हम निर्भय थे यहां अपने–अपने घरों में, और टकटकी लगाए देख रहे थे जिस बाघ को, वह पिंजरे में था दूरदर्शन के, और हम पर झपट्टा नहीं मार सकता था।''[5]

अरबी–फारसी भाषाः– देवताले जी मानक भाषाओं के साथ–साथ अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए विदेशी भाषाओं का प्रयोग करने में सक्षम रहे हैं, उनके काव्य में अरबी–फारसी भाषा के शब्द भी समाहित है। यथाः–

''सिर्फ सीढ़ी पर खड़ी हुई, वह औरत दिखती है घर छाबती हुई, और वह आदमी तड़की हुई जमीन पर बैठे बच्चों को, चूसने के लिए राड़े का छिलका थमा ईंट–पत्थर के टुकड़े बटोर, सीढ़ी के पास खड़ा हो जाता है।''[6]

इस प्रकार कवि ने तत्कालीन परिस्थितियों को पाठक हृदय तक पहुंचाने के लिए बिंबो में जिन भाषा शब्दों का प्रयोग किया है वे सहज ही कवि की भाषा में समाहित हुए हैं, उन्होंने प्रकृति चित्रण को जो रूप दिया है वह सहज ही सुग्राह्य है जैसेः– ''नदी में डब डब आंखों से कमल के फूल, या बरसात में फूटती चिंगारियों से नहाते हुए रोती हुई औरत।''[7]

कवि आजाद हृदय होता है वह अपने हृदय में उत्पन्न विचारों को विविध काव्य कलाओं के माध्यम से मानवी–करण के रूप में निर्जीव वस्तुओं को भी आत्मसात् करके वार्ता के लिए विवश कर देता हैं और आपने पत्थर की पीड़ा को भी पाठकों तक पहुंचने में सक्षम रहे हैं। यथा–

''वह उतरता जाता है सीढ़ियां, एक के बाद एक, समय और जगह को लांघता वह, पहुंचता है वहां बार–बार जहां पत्थरों के फफोलों के बीच से।''[8]

विचारधारा ही कवि का काव्य–रूप होता है, उसी पर आरूढ़ होकर अपनी रचना को मूर्त रूप देता है, जिसे कवि स्वयं स्वीकार करते हैं यथाः– ''विचारधारा रचनाकार की समग्र दृष्टि, समग्र सोच का हिस्सा होती है न सिर्फ सृजन में, बल्कि जीवन के अन्य क्रिया–कलापों में भी वह प्रकट होती रहती है, होनी चाहिए और होगी। अगर विचारधारा कवि के भीतर है तो वह उसकी हर चीज में प्रकट होगी। ऐसा नहीं होगा कि साहित्य सृजन करते समय वह मार्क्सवादी हो जाए और बाकी जीवन में वह सब मध्यमवर्गीय व्यक्ति की तरह से करता रहे। मैं तो विचारधारा को पूरी तरह स्वीकार करता हूँ।''[9]

कवि देवताले जी इतिहास को अपने अंतर्मन में उतारकर तत्कालीन परिस्थितियों को बिम्ब और स्वर के माध्यम से प्रस्तुत करने में सक्षम रहे हैं। समय के प्रवाह की नजाकत को भांपकर उसको सगुण और साकार रूपों में प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं। कविता सहज में कवि के सामने विचारों के प्रसारण के लिए मानो निवेदन करती

नजर आती है। कवि सार्वभौमिक का धनी होता है, वह सार्वजनिक संकट, घटनाओं और दुखों की हिस्सेदारी का समर्थक है। रोजमर्रा के अनुभव कवि के काव्य का आधार पक्ष दृष्टिगत होता है। कवि का उद्देश्य महज कविता लिखना और काव्य प्रशंसा पाना नहीं, बल्कि अपने विचारों से जन सामान्य को सचेत करना और अपने मन की पीड़ा को प्रकट करने के लिए प्रेरित करना है। संघर्ष और आंदोलन का समावेश आपकी रचनाओं का मूल आधार रहा है, जो आपकी प्रगतिवादी विचारधारा के कवि होने का समर्थन करती है। आपकी रचनाओं में जो तथ्य समाहित हैं, वह निरीह कल्पना न होकर, कहीं ना कहीं जीवन का सार प्रस्तुत करती आलोकित होती है। आप एक स्वतंत्र विचारधारा के लेखक के साथ–साथ स्वतंत्र वाणी के भी सम्राट हैं, जिसका जीवित उदाहरण आपका काव्य–संग्रह ''मेरे साक्षात्कार'' है, जिसमें आपने मुक्तिबोध के आत्म संघर्ष को काफी विस्तार से कहा है। एक सबसे बड़ी बात आपकी यह है कि सर्जनात्मकता सहज रूप से एक बेहतर आदमी बनने में सफल रही है। वैयक्तिक स्वतंत्रता का अर्थ बताते हुए आपने जमीर को मनुष्य का मूल धन समझा है।

चंद्रकांत देवताले जी जिस परंपरा के कवि रहे हैं, उन कवियों की कलम अपने जीवित संदर्भ से जोड़ने के लिए रचनात्मक संघर्ष में लगे रहे हैं। इस संघर्ष का सुखद परिणाम यह है कि उनकी रचनाओं में देश और कल के बीच कोई अंतर दिखाई नहीं पड़ता, जिसका सबसे सार्थक उदाहरण ''भूखंड तप रहा है'' में देखा जा सकता है जो अब तक की उनकी सबसे लंबी कविता है। कवि के पास एक ऐसी संवेदना दृष्टि रही है, जो अपने परिवेश और परिस्थितियों के सभी ऊबड़–खाबड़पन को समेटती हुई एक समतल धरातल का रूप देकर या एक सुगम मार्ग प्रस्तुत कर समय के मूल उत्सों तक जाती है। कवि की रचनाओं में पहाड़ हंसते हैं, पेड़ रोते हैं, पत्थर बोलते हैं और तो और राहगीरों को पगडंडिया बुलाती है, जो उनकी बेजोड़ काव्य कला के नमूने हैं। कवि की संवेदना धीरे–धीरे गहनत्तर होती हुई एक जीवंत करुणा में अपनी परिणति पाती दृष्टिगत होती है, इस करुणा का आधार कवि की तत्कालीन स्थिति और जनता का स्पष्ट और पुष्ट रूप प्रदर्शित होता है। कवि की रचनाओं में एक दिशा और दशा जीवंतता का मार्ग प्रशस्त करती है। उनकी कविताओं में कहीं स्नेह तो कहीं आक्रोश बिम्ब रूप में समाहित है।

सन्दर्भ

1. देवताले, चंद्रकांत। इतनी पत्थर रोशनी। वाणी प्रकाशन, 2002।
2. देवताले, चंद्रकांत। लकड़बग्घा हंस रहा है। वाणी प्रकाशन, 1980।
3. देवताले, चंद्रकांत। आग हर चीज़ में बताई गई थी। राजकमल प्रकाशन, 1987।
4. देवताले, चंद्रकांत। खुद पर निगरानी का वक्त। वाणी प्रकाशन, 2015।
5. देवताले, चंद्रकांत। पत्थर फेंक रहा हूँ। वाणी प्रकाशन, 2010।
6. देवताले, चंद्रकांत। लकड़बग्घा हंस रहा है। वाणी प्रकाशन, 1980।
7. देवताले, चंद्रकांत। पत्थर की बेंच। वाणी प्रकाशन, 1996।
8. देवताले, चंद्रकांत। भूखंड तप रहा है। वाणी प्रकाशन, 1982।
9. देवताले, चंद्रकांत। मेरे साक्षात्कार। किताब घर प्रकाशन, 1993।

****